Pedagogy Insights
An International Peer reviewed Journal of Multidisciplinary research
Vol. 1, Issue. 2, July-September 2026, 45-51
ISSN: 3139-843X
DOI: https://doi.org/10.5281/

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में मूल्यों का महत्व एवं मूल्य द्वन्द

[1]अनिल कुमार मौर्य, [2]प्रो0 सुनील कुमार

[1]शोध छात्र लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, Anilmaurya7275@gmail.com

[2]प्रोफेसर, आचार्य नरेन्द्रदेव टीचर्स ट्रेनिंग, पी0 जी0 कॉलेज सीतापुर।

सारांश:

मनुष्य जिस समाज में रहता है उसमें उसके आदर्श आचार - विचार ही मूल्य कहलाते है। मूल्यों की प्रतिष्ठा समाज में तब प्रभावी और अनुकरणीय हो जाती है। जब उनका क्रियात्मक स्वरूप दृश्यमान होता है। शिक्षा तथा मूल्य एक - दूसरे से मानव सभ्यता के अनादिकाल से ही सहसम्बन्धित है। मूल्य ही शिक्षित समाज के उत्थान व पतन का निर्धारण करते हैं। मनुष्य सभ्यता के अनादिकाल से ही अपने अस्तित्व के विकास तथा परिमार्जन के लिए प्रयासरत् रहा है। सदैव उसने साधारण से अच्छा तथा अच्छे से बेहतर के लिए अपने परिश्रम तथा बुद्धि को दिशा दी है। इन्हीं से उसने अपने अन्दर सदगुणों का विकास तथा दुष्प्रवृत्तियों का परिमार्जन किया है। आधुनिक काल के चिन्तन में आज भी भारतीय प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का विनियोग निरन्तर बना हुआ है। अनादिकालीन परम्परा से मानव - जीवन के समग्र क्षेत्र में व्याप्त, आचार - विचार प्रणाली अथवा सत्य और न्याय व्यवस्था पर आधारित गुण - धर्म जिनके सहज अनुपालन से समाज में विषमता के स्थान पर समता, प्रियता और एकता का वातावरण निर्मित हो मूल्य प्रणाली के अन्तर्गत आता है।

मुख्य शब्द: वर्तमान वैश्विक परिपे्रक्ष्य में शिक्षा, मूल्य, मूल्यों का महत्व, मूल्य द्वन्द

ARTICLE HISTORY
Received: 10 September 2026; **Accepted:** 12 September; **Published:** 20 September

CITATION
अनिल कुमार मौर्य., (2026). वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में मूल्यों का महत्व एवं मूल्य द्वन्द. *Pedagogy Insights*, 1(2), 45-51.
DOI: https://doi.org/ 10.5281/

1. प्रस्तावना

शिक्षा के अन्तर्गत वह सब निहित है, जो मनुष्य जन्म् से लकेर मृत्यु तक परिवार तथा समाज व शिक्षा के विभिन्न अभिकरणों के द्वारा सीखता है, परन्तु इन अभिकरणों के माध्यम से क्या सीखेगा ? वह परिवार, समाज व राष्ट्र के लिए किस प्रकार उपयोगी होगा। यह दिशा - निर्देश शिक्षा को मूल्य ही देते हैं। मूल्य ही वे तत्व अथवा निर्धारक है जो यह तय करते हैं कि अमुक व्यक्ति किस प्रकार की शिक्षा से समाज तथा विश्व के उपयोगी होगा।

COPYRIGHT: © 2026 The Author(s). This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0International License (CC-BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited. See http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ISSN: 3139-843X

मूल्य ही किसी समाज और राष्ट्र के विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। किसी समाज अथवा राष्ट्र के मूल्य जितने ही शाश्वत् व परमार्थिक होते हैं। वह समाज व राष्ट्र उतना ही उन्नतशील होता है। मूल्यों में द्वन्द की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब एक जैसी स्थिति दो विपरीत मूल्यों में प्रकट होती है तथा दोनों ही मूल्य अपनी अपनी जगह पर दृढ़ता से बँधे होते हैं। अथवा जब एक मूल्य दूसरे मूल्य को कम या अधिक महत्व देते हैं । तब समाज में विद्यमान अन्य मूल्यों के सन्दर्भ में मूल्य द्वन्द की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसमें दो हितों के टकराव से भयंकर परिणाम प्रकट होते हैं, जो किसी भी सभ्य समाज के लिए लाभकारी नही होते हैं ।

मूल्यों के बुद्धिमत्तापूर्वक चुनाव (समाज, राष्ट्र एवं विश्व उपयोगिता के आधार पर) द्वारा मूल्य द्वन्द से बचा जा सकता है। अतः शिक्षा में मूल्य शिक्षा के द्वारा उचित व अनुचित, समाज, राष्ट्र व विश्व उपयोगिता का ज्ञान देकर विद्यार्थियों को विश्व कल्याण के लिए तैयार किया जा सकता है, जिससे भविष्य में विद्यार्थी समाज, राष्ट्र व विश्व के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे ।

मूल्य शिक्षा का अर्थ-

मूल्य किसी व्यक्ति के व्यवहार या गतिविधि के संचालन को नियंत्रित करते हैं, इसमें सही और गलत की अवधारणा को व्यवस्थित करना और बचाव करना शामिल है। मूल्य शिक्षा से अभिप्राय है वे कार्य - व्यवहार जो व्यक्ति के उसके गुण दोष से प्रभावित करते हैं, तथा साथ ही उसे धनात्मक और परमार्थिक चिंतन के लिए प्रेरित करते हैं । इस सन्दर्भ में अनेक

विद्वानों के मत हैं -

डॉ० राधाकुमुद मुखर्जी – "समाज में ऐसी समस्त इच्छाएँ अथवा अभिलाषाएँ मूल्य संज्ञक होती हैं। जो अनुबन्ध की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति में अन्तर्निहित हो जाती हैं, तथा परम्परा से समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा भी व्यक्ति की प्राथमिकताओं अभिरूचियों और उसकी महत्वाकाँक्षाओं के रूप में प्रकट होती है। "

सी० वी० गुड- "मूल्य एक ऐसी विशेषता है जिसे मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, नैतिक या सौन्दर्यात्मक विचारों के परिप्रेक्ष्य में उसे उत्कृष्ट तथा महत्वपूर्ण माना जाता है। यह नैसर्गिक रूप से व्यक्ति के अन्तर्मन में निहित रहते हैं, जो उसके विश्वास के अनुरूप सुरक्षा और नैतिकता प्रदान करते हैं । ''

अतः सार्वभौमिक रूप से मूल्य को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है, कि वह आचार विचार, विषयवस्तु अथवा न्याय व्यवस्था आदि का वह स्वरूप जिसके सहज परिपालन से निष्पक्ष रूप से जन समाज में सत्य न्याय और पवित्रता का प्रभावशाली प्रेरणाप्रद वातावरण निर्मित हो, वह मूल्य है।

मानव मूल्यों के विकास में विद्यालयी शिक्षा की भूमिका - मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण का एक महत्वपूर्ण तत्व है। जो व्यक्ति के आचार - विचार प्रणाली अथवा सत्य और न्याय व्यवस्था पर आधारित गुण धर्म में परिलक्षित होते हैं। मूल्य व्यक्ति के चेतन व अचेतन दोनों प्रकार के व्यवहारों को प्रदर्शित करते हैं। इसलिए जीवन के आरम्भिक वर्ष में ही मूल्यशिक्षा विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। बचपन की अवस्था व्यक्तिगत के निर्माण अवस्था कही जाती है, इस अवस्था में दी गयी प्रत्येक शिक्षा जीवन के अग्रिम वर्षो तक निरन्तर स्थायी बनी रहती है। इसलिए शिक्षको को जो बालकों के चरित निर्माण अर्थात आरम्भिक शिक्षा से सम्बन्धित हैं, सद्वृत्ति निर्माण, सद्गुणों की आदत डालने का प्रयास करना चाहिए। जिस प्रकार बूँद - बुंद से घड़ा भरता है उसी प्रकार विद्यार्थी को दी गयी एक एक चारित्रिक शिक्षा अग्रिम पीढ़ी के लिए मूल्य शिक्षा

ISSN: 3139-843X

को ग्रन्थ का कार्य करती है। आज जो विद्यार्थियों में नैतिकता के गुणों का हनन, मूल्यों की गिरावट दिखायी देती है यह शिक्षा में मूल्यों की कमी को प्रदर्शित करती है ।

जे0 सी0 वर्मा ने 'स्व विकास के लिए शिक्षा' (1983) में निम्नलिखित मूल्यों का सुझाव दिया है-

सार्वजनिक सम्पत्ति की देख-

1. सार्वजनिक संपत्ति की देखभाल
2. स्वच्छता
3. सहकारिता
4. दूसरों का विचार
5. आजादी
6. कड़ी मेहनत
7. ईमानदारी
8. अपने देश के लिए प्यार
9. न्याय
10. अहिंसा
11. वैज्ञानिक स्वभाव
12. धर्मनिरपेक्षता
13. आत्म-अनुशासन
14. लोगों की सेवा
15. टीम भावना
16. सत्य
17. और मूल्य उन्मुख स्कूल जलवाय

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली द्वारा आयोजित मूल्य शिक्षा (1986) पर एक सम्मेलन ने निम्नलिखित मूल्यों की पहचान की, जिन्हें स्कूल के माहौल का निर्माण करना चाहिए-

- व्यक्ति का सम्मान
- प्रतिस्पर्धा के बजाय सेवा के लिए शिक्षा
- खुलापन, स्वतंत्राता, लचीलापन
- मानव संबंध
- अधिकतम सहभागिता
- संवेदनशीलता और जागरूकता
- एक दूसरे के लिए चिंता

ISSN: 3139-843X

- वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वैज्ञानिक स्वभाव
- ईमानदारी और अखंडता
- समय का मूल्य
- परिपक्व स्व
- आत्म - स्वीकृति, आत्म- जागरूकता, आत्म-विश्वास
- क्षमा की ओर ले जाने वाली समझ
- भगवान के साथ रिश्ता
- व्यक्तिगत लेकिन सामाजिक रूप से जिम्मेदार
- काम की नैतिकता
- श्रम की गरिमा
- विश्वास
- निडरता
- नैतिक साहस
- सहिष्णुता ध् अंतर की स्वीकृति
- उपदेश देने से पहले अभ्यास करें
- दया
- सिर, हृदय, हाथ का प्रयोग
- संवर्धन
- देश प्रेम
- संचार
- पर्यावरण संरक्षण
- न्याय
- विश्व और अंतरराष्ट्रीय समझ के लिए एक्सपोजर
- एकीकृत विकास
- कर्मचारी विकास
- चरगाह की देखभाल
- टीम भावना
- अभिभावक - शिक्षक संबंध
- विकसित संभावनाए
- आशावाद, विश्वास और आशा
- दृष्टि और उद्देश्य की भावना
- आजीवन सीखनेवाला
- नवीनता और साधन संपन्नता

- रचनात्मकता और पहल
- अपनेपन की भावना
- गर्व की भावना
- जोखिम लेने की क्षमता
- साहस की भावना
- समर्पण और प्रतिबद्धता
- सादगी और तपस्या
- मानक निर्धारित करने और उन पर टिके रहने की क्षमता
- अनुकूलनशीलता
- किसी की सीख पर गौर।

मूल्यों के लिए शिक्षा का उद्देश्यः यूनेस्को परियोजना यूनेस्को - एन.आई.ई.आर. एशियाई देशों में नैतिक शिक्षा पर संयुक्त रिपोर्ट (1980) में मूल्य (नैतिक) शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य सूची) हैं-

- बच्चे के व्यक्तित्व का उसके शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलू में पूर्ण विकास।
- अच्छे शिष्टाचार और जिम्मेदार और सहकारी नागरिकता का समावेश।
- व्यक्ति की गरिमा और मौलिक मानवाधिकारों की पवित्राता के लिए सम्मान विकसित करना।
- देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना का समावेश।
- सोचने और जीने का एक लोकतांत्रिक तरीका विकसित करना।
- विभिन्न धार्मिक आस्थाओं के प्रति सहिष्णुता और समझ का विकास करना।
- सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवीय भाईचारे की भावना का विकास करना
- बच्चों को कुछ अलौकिक शक्ति और व्यवस्था में विश्वास करने में मदद करना जो इस ब्रह्मांड और मानव जीवन को नियंत्रित करने के लिए माना जाता है (यह विश्वासियों के समुदायों से संबंधित है)
- ध्वनि नैतिक सिद्धांतों के आधार पर बच्चों को नैतिक निर्णय लेने में सक्षम बनाना।

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में मूल्यों का महत्व –

शिक्षा ही वह श्रेष्ठ साधन है, जिसके माध्यम से बालक का बौद्धिक और सामाजिक विकास होता है, किन्तु मूल्य शिक्षा के प्रभाव से बालक के कार्य व्यवहार में परिमार्थिक रूप दृढ़तापूर्वक प्रतिष्ठित होता है।
आज के भौतिकतावादी युग में हर दृष्टिकोण से विकास तो बहुत हो रहा है, किन्तु वह कल्याणकारी कम, विनाशकारी ज्यादा है, इसका प्रमुख कारण है, मूल्य परक शिक्षा का नितांत अभाव।
आज भौतिकवाद और मानवता के मध्य द्वन्द की भीषण स्थिति विनाश के कगार पर है। दुःखद, हास्यप्रद और आश्चर्यजनक है, जहाँ एक ओर एक से बढ़ कर एक हथियारों का निर्माण हो रहा है, वहीं शांति सम्मेलन, सदभावना आदि के लिए वार्तालाभ, सभा और आन्दोलन किये जा रहे हैं, यह विडम्बना क्यों? इस पर विवेक विचार मंथन से यह तथ्य सामने आयेगा - सर्वत्र उत्तरोत्तर शाश्वत मूल्यों का ह्रास हो रहा है। सामाजिक जीवन तनावग्रस्त, कुन्ठाओं, संघर्ष और हिंसा से अत्यन्त

गम्भीर रूप से आक्रान्त है।

अतएव ऐसी विषम परिस्थिति को सार्वभौम रूप से सबके कल्याण के लिए यादि मार्ग प्रशस्त करना है तो मूल्य शिक्षा को बालक के प्रारम्भिक शिक्षण काल से उसके शिक्षण अथवा प्रशिक्षण की सभी विधाओं में विशेष रूप से प्रभावित किया जाना चाहिए, तभी वैश्विक रूप से शांति, समरसता, अखण्डता, प्रियता और बन्धुत्व की भावना सुदृढ़ होगी तथा मानवीय मूल्यों का अभिरक्षण और संरक्षण सर्वत्र नैसर्गिक रूप से दृश्यमान होगा।

अतः वर्तमान वैश्विक परिपेक्ष्य में, ‘‘नैतिक मूल्यों के अभाव में, एक सभ्य समाज की परिकल्पना करना मृगमरिचिका के तुल्य व्यर्थ है।’’

मूल्य द्वन्द-

द्वन्द शब्द का तार्पय है दो विचारों में विरोधाभास एक विशाल समाज में मूल्य द्वन्द जीवन का यर्थाथ है। सभी मनुष्यों के मूल्यों में साम्य नही होता है। हर व्यक्ति अपने ढंग से मूल्यों को महत्व देता है। समाज में मूल्यों को लेकर द्वन्द या संघर्ष की स्थिति तब प्रबल हो जाती है, जब परस्पर दो विचार धाराओं में टकराव होता है किसी भी समाज में मूल्यों की टकराहट से और उसके प्रति उपेक्षित भाव से एक स्वस्थ समाज विघटित होकर विखर जाता है। मूल्यों में द्वन्दों के प्रमुख दो कारण है-

जब सभ्य समाज और उसकी संस्कृति के अभिरक्षण हेतु कथ्यों और तथ्यों का क्रियात्मक स्वरूप निष्क्रिय हो जाता है अर्थात कथनी कुछ ओर करनी कुछ और ही दिखाई देती है। मूल्यों के वास्तविक स्वरूप का व्यवहार में अभाव दिखाई पड़ता है।

अज्ञानता, स्वार्थपरक दृष्टिकोण अथवा वर्चस्व को लेकर भी एक बहुसमाज में मूल्यों के प्रति द्वन्दात्मक स्थिति प्रकट होती है। देशकाल परिस्थिति के अनुसार व्यक्ति अनेक बार द्वन्दों का सामना और उसका निराकरण ठीक से नहीं कर पाता है, क्योकि विरोधी मूल्यों के प्रति उसकी अस्था प्रभावित होती है। मूल्यों की द्वन्दता के कारण सामाजिक जीवन विखर जाता है । एक सभ्य समाज की परम्परागत सांस्कृतिक विरासत की सत्यनिष्ठ, सार्वभौमिक, सर्वकल्याणप्रद आचार विचार प्रणाली का स्वरूप विकृत हो जाता है। महाभारत काल के समय मूल्यों के द्वन्द के कारण ही सामाजिक एकता, अखण्डता और समता तार तार हो गई।

यह तथ्य भी निर्विवादित है कि कभी कभी मूल्यों में द्वन्द की स्थिति स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए उपयोगी भी हो जाती है, यदि मूल्यों में परिवर्तन या प्रतिवाद तर्क की कसौटी पर खरें उतरते हैं, तो वे सभ्य समाज के आदर्शो और सम्बन्धों को जीवन्त करते हैं । इस दृष्टि से कभी कभी मूल्यों की प्रतिष्ठा में द नकारात्मक होते हुए भी सकारात्मक भाव को प्रतिष्ठित करते हैं। जैसे-

"अहिंसा परमो धर्मः"

यह मानवता परक बहुत ही आदर्श वाक्य है, किन्तु जब कोई अपने निजी स्वार्थ और वर्चस्व की ओट में किसी के विचारों का दोहन करता है या शोषण करता है, उस समय शोषक या दुराचारी के प्रति "अहिंसा का भाव" रखकर प्रतिरोध न करना अथवा अन्याय को सह लेना, यह एक बहुत बड़ी भूल है । यहाँ पर अत्याचारी या शोषक के प्रति उसकी ही भाषा में बुद्धि विवेक से उसके दमन हेतु "शठे शाठ्यं समाचारेत" का अनुगमन करना चाहिए । अर्थात दुष्ट के साथ उसी की भाषा में उत्तर देना चाहिए ।

ISSN: 3139-843X

राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त जी ने " जयद्रथ वध" में उल्लेख किया है जो आज भी प्रासंगिक और अनुकरणीय है।

"अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड़ देना धर्म है।
इस तथ्य पर ही कौरवों से पाण्डवों का रण हुआ,
जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ ।।"

महाभारत के अनुसार युद्धभूमि के विपक्ष में जब अर्जुन को अपने ही सगे सम्बन्धियों को देख कर मोह व्याप्त हुआ, तो उस समय मूल्यों की प्रतिष्ठा में तार्किक रूप से उन नैतिक मूल्यों को महत्व दिया गया जिससे सत्य और न्याय की रक्षा हो ।

निष्कर्ष-

वर्तमान समय में समाजवाद की ओट में वर्गभेद और पूँजीवाद पनप रहा है। व्यक्ति की कथनी में मूल्यों की चर्चा जोर शोर से है, किन्तु करनी में कुछ भी नहीं है। यह निर्विवाद रूप से सत्य और मान्य है कि प्रत्येक धर्म में नैतिक नियमों का प्रतिपादन किया गया है, जिसका मन, वचन और कर्म से पालन करना ही मनुष्यता है द्य धर्माचरण के अनुपालन में विविधता भले ही दिखाई देती हो, किन्तु नैतिक मूल्यों में अभिन्नता प्रकृति सिद्ध है ।

संदर्भ –

1. Das, Sayan (2008).Value based education. Retrieved on September 23,2010 from http://theviewspaper.
2. Gawande, E.N.,(2002). Value oriented education, Vision for better living.
3. Kumar, Pradeep (2009). Role of value education in contemporary society.
4. http://www.indiaedu.com/articles/value-education.html
5. http://www.educationzing.com/india/value-education.html
6. http://wiki.answers.com/professionalethics/education
7. एनसीईआरटी (NCERT). (2019) - मानवीय मूल्यों की शिक्षा पर दिशानिर्देश नई दिल्लीः एनसीईआरटी प्रकाशन।
8. मिश्रा, ए. (2022) - सामाजिक मनोविज्ञान वाराणसीर: काशी विद्यापीठ प्रकाशन ।
9. सिंह, सौरभ, (2017) - मूल्य एवं शांति शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।